# PURANMAL BAJORIA TEACHER'S TRAINING COLLEGE

## पूरनमल बाजोरिया शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

Narga Kothi, Champanagar, Bhagalpur-812004

(B.Ed. & DEl.Ed.)

Recognized by :

NCTE, ERC-BHUBANESHWAR

भारती शिक्षा समिति बिहार पटना द्वारा संचालित (विद्या भारती)

# सूक्ष्म शिक्षण कौशल

# Micro Teaching Skill

## B.Ed. & DEl.Ed.

## &

## Teaching Technique

Dr. Rajesh Kumar Verma
Principal
Mob. 9775402178

For Student Teachers
& Teachers

# पूरनमल बाजोरिया शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

नरगा कोठी, चम्पानगर, भागलपुर

## दृष्टि (Vision)

भारतीय शिक्षा दर्शन, मनोविज्ञान और जीवन मूल्यों के आधार पर सृजनशीलता,जीवन दृष्टि,चिंतन, कौशल, सामाजिक संवेदना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अभिरूचि क्षमता और व्यवहार कुशल का युगानुकूल विकास कर सुयोग्य, सक्षम, सच्चरित्र और अध्यवसायी पीढ़ी का निर्माण एवं विकास करना जो देश भक्ति, समाज सेवा और वैश्विक दृष्टि से ओत प्रोत हो तथा समरस सुसम्पन्न तथा सुसंस्कृत समाज व राष्ट्र के निर्माण हेतु कृतसंकल्प हो।

## संकल्प (Mission)

शासन और समाज द्वारा संचालित उच्च शिक्षा संस्थानों के साथ सतत् और सघन संपर्क व संवाद करते हुए उनके विकास में सहयोग करना तथा सभी हितधारकों की क्षमता का विकास करना। शाश्वत तथा समग्र जीवन दृष्टि से युक्त शिक्षण व अध्ययन सामग्री का विकास करना, तत्सम्बन्धी शोध परियोजनाओं का संचालन करना,विभिन्न पाठ्य विषयों में विशेषज्ञों, प्राध्यापकों एवं प्रशिक्षको का निर्माण एवं विकास करना तथा छात्रों, शिक्षकों एवं प्रबंधन के लिए बहुविध कार्यक्रमों का विकास करना।

# सूक्ष्म शिक्षण की परिभाषा

## Definition of Microteaching

1968 में स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में जहाँ इस प्रणाली का जन्म हुआ, एलन ने बताया कि ।

"Microteaching is a scaled down teaching encounter in class, size and time".

एलन और रियान (1968) ने सूक्ष्म अध्यापन को निम्न पाँच मूलभूत सिद्धान्तों पर आधारित बताया है।

1) सूक्ष्म अध्यापन वास्तविक अध्यापन है।
2) परन्तु इस प्रणाली में साधारण कक्षा अध्ययन की जटिलताओं को कम कर दिया जाता है।
3) एक समय में किसी भी एक विशेष कार्य एवं कौशल के प्रशिक्षण पर ही जोर दिया जाता है।
4) अभ्यास-क्रम की प्रक्रिया पर अधिक नियंत्रण रखा जा सकता है।
5) परिणाम सम्बन्धी साधारण ज्ञान एवं प्रतिपुष्टि के प्रभाव परिधि विकसित होती है।

सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया में मुख्यतः तीन स्तर होते हैं।

(I) ज्ञान प्राप्ति की स्थिति।
(ii) कौशल अभिग्रहण स्थिति।
(iii) कौशल अन्तरण स्थिति।

इन तीन स्थितियों की प्रक्रियाएँ इस प्रकार हैं :-

(A) ज्ञान प्राप्ति की स्थिति (Knowledge Acquisition Phase) -
(a) अध्यापन कौशल प्रदर्शन का निरीक्षण
(b) प्रदर्शित कौशल का विश्लेषण
(B) कौशल अभिग्रहण स्थिति ➡ a) सूक्ष्मपाठ तैयार करना
(Skill Acquisition Phase) b) कौशल का अभ्यास
c) निष्पादन का मूल्यांकन

| | |
|---|---|
| (C) अन्तरण स्थिति - (Transfer Phase) | कौशल का वास्तविक अध्यापन स्थिति में अन्तरण |

## विशिष्टताएँ (Characteristics)

**सूक्ष्म अध्यापन प्रक्रिया को अधिक स्पष्ट रूप से जानने हेतु अभ्यास क्रम पर ध्यान रखा जाए -**

1. छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका 5 - 10 छात्रों की कक्षा में अध्यापन करता है।
2. यह छात्राध्यापक या तो वास्तविक छात्राध्यापक होते हैं, अथवा अन्य अध्यापकों से छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं की भूमिका निर्वाह(Role play) कराई जाती है ।
3. सूक्ष्म पाठ(Micro Lesson) की विषय-वस्तु बहुत कम अथवा एक ही सम्प्रत्यय (Concept) तक सीमित होती है।
4. यह सूक्ष्म पाठ योजना 5 - 10 मिनट का होता है।
5. इस पाठ के उपरान्त पर्यवेक्षक जो प्राध्यापक भी हो सकते हैं या छात्राध्यापक भी, पाठ को सुधारने और भली प्रकार पढ़ाने व निश्चित कौशल के वांछित विकास हेतु अपनी टिप्पणी देता है।
6. इन सुझावों को ध्यान में रखकर छात्राध्यापक निश्चित कौशल से सम्बन्धित अपने पाठ की पुनर्योजना बनाता है।
7. उन्हीं छात्राध्यापक /छात्राध्यापिकाओं को विषय बदलकर परन्तु उसी कौशल पर आधारित अथवा अन्य छात्राध्यापक/ छात्राध्यापिकाओं को वहीं पाठ उतनी ही अवधि में पुनः पढ़ाया जाता है।
8. वही पर्यवेक्षक पुनः छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं को प्रतिपुष्टि (Feedback) देता है।

इस प्रकार सूक्ष्म शिक्षण में, सूक्ष्म अध्याय का चक्र (Cycle) इस प्रकार से सम्पन्न होता है।

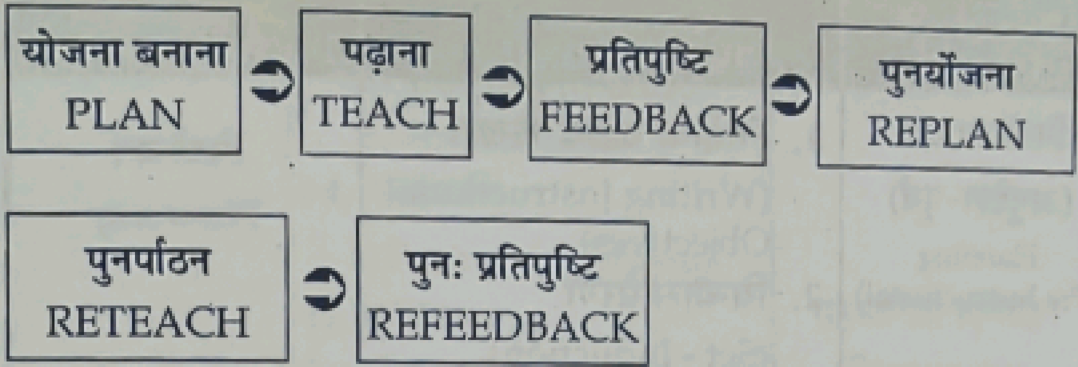


## Micro Teaching Cycle

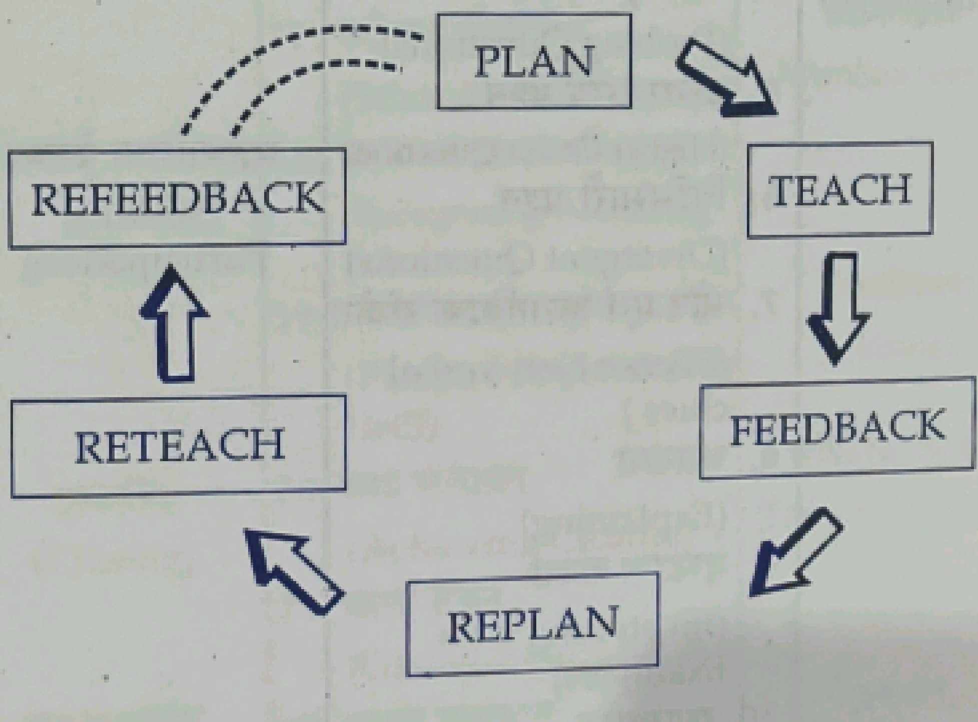

# अध्यापन कौशल
## (Teaching Skills)

| पाठ का स्तर (Stages of Lesson) | अध्यापन कौशल घटक (Component Teaching Skills) | प्रमुख पाठ क्रिया उद्देश्य (Main Aim of Teaching Activities) |
|---|---|---|
| नियोजन क्रम (अनुदेश-पूर्व) Planning (Pre Instructional) | 1. शैक्षिक उद्देश्य लेखन (Writing Instructional Objectives)<br>2. विन्यास प्रेरण (Set - Induction) | नियोजन Planning |
| प्रस्तुतीकरण (अनुदेशन) Presentation (Instructional) | 3. प्रश्न सहजता (Fluency in Questioning)<br>4. खोजपूर्ण प्रश्न (Probing Questions)<br>5. उच्चस्तरीय प्रश्न (Higher Order Question)<br>6. विभिसारी प्रश्न (Divergent Questions)<br>7. मौन एवं अशाब्दिक संकेत (Silence Non-verbal clues ) | सहभागिता प्रेरणा (Seeking Participation) |
| | 8. व्याख्या (Explaining)<br>9. दृष्टान्त कला (Illustrating with Examples)<br>10. व्याख्यान (Lecturing)<br>11. श्यामपट उपयोग (Use of Blackboard)<br>12. दृश्य-श्रव्य साधन का उपयोग (Use of Audio-Video Aids) | सम्प्रेषण (Communicating) |

| पाठ का स्तर (Stages of Lesson) | अध्यापन कौशल घटक (Component Teaching Skills) | प्रमुख पाठ क्रिया उद्देश्य (Main Aim of Teaching Activities) |
|---|---|---|
| | 13. सम्प्रेषण की पूर्णता (Completeness of Communication) | |
| | 14. पाठ गति (Pacing the Lesson) | |
| | 15. प्रबलन (Reinforcement) | सहभागिता प्रोत्साहन Encouraging Participation |
| | 16. छात्र सहभागिता विस्तार (Increasing Pupil Participation) | |
| | 17. उद्दीपन परिवर्त्तन (Stimulus Variation ) | ध्यानाकर्षण Attention seeking |
| | 18. छात्र व्यवहार अभिज्ञान (Recognising Attending Behaviour) | |
| | 19. नियोजित पुनरावृत्ति या ड्रिल (Planned Repetition or Drill) | स्थायीकरण (Fixing) |
| समाप्ति (Closing) | 20. पाठ समापन (Achieving Closure) | परिष्करण मूल्यांकन (Finishing Evaluation ) |
| | 21. कार्य देयन (Giving Assignment) | |
| प्रबन्धात्मक (Managerial) | 22. कक्षा प्रबन्धन (Class Management) | प्रबन्धन Management |

इन कौशल्य का एक - दूसरे से एवं आपस में जो सम्बन्ध है वह अग्रलिखित प्रतिमान से स्पष्ट होता है -

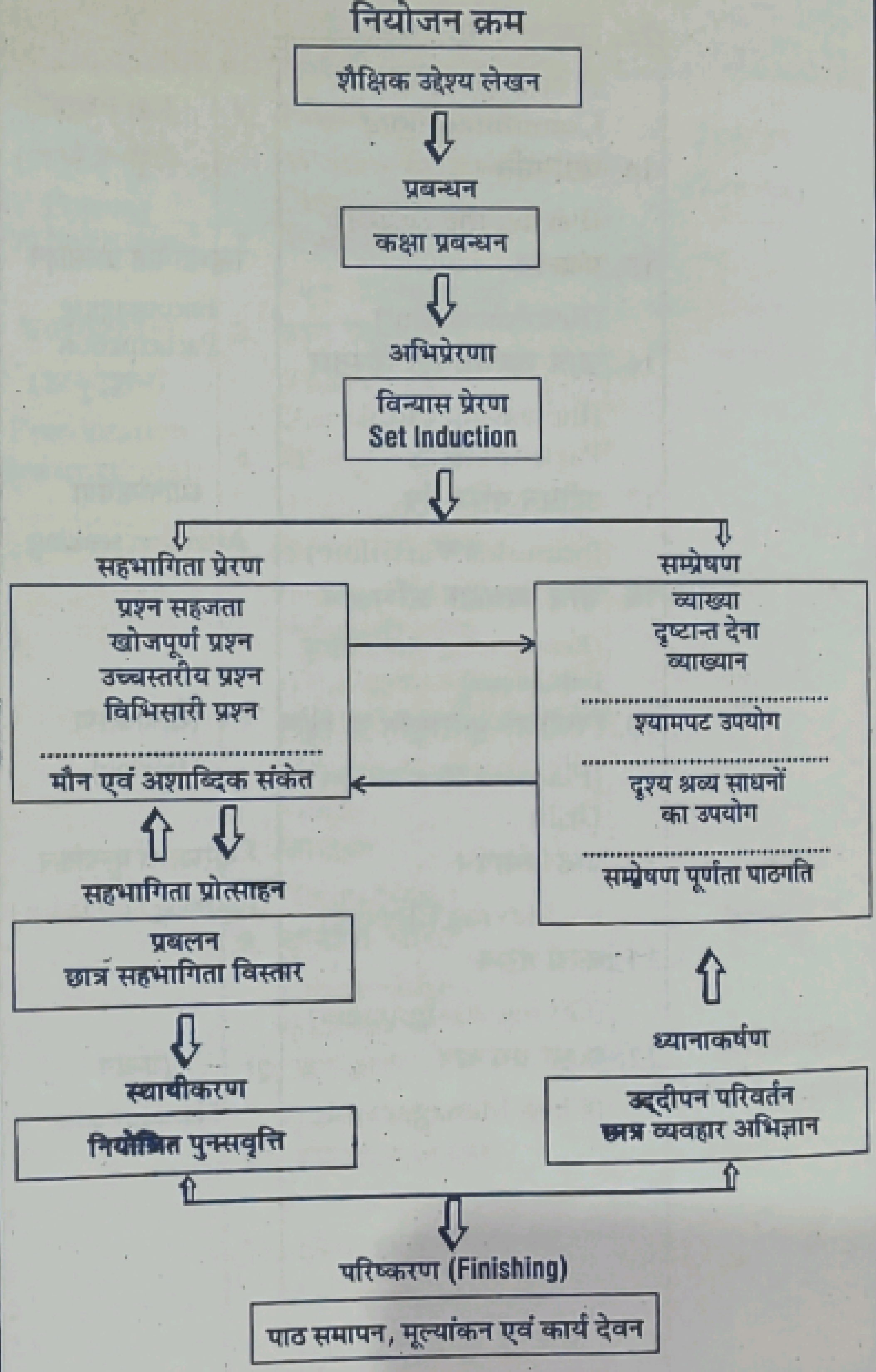

# घटक कौशल (1)
## (Component Skills)

प्रो० ब्लूम ने शिक्षा के व्यवहारगत उद्देश्यों का वर्गीकरण तीन पक्षों में बाँटा है-

I) ज्ञानात्मक पक्ष,

ii) भावात्मक पक्ष, और

iii) क्रियात्मक पक्ष।

1. **ज्ञानात्मक पक्ष (*Cognitive Domain*)**

इस श्रेणी के अन्तर्गत वे व्यवहारगत उद्देश्य आते हैं जिनका सम्बन्ध ज्ञान के पुर्ननिर्माण, बौद्धिक क्षमताओं तथा कौशलों के विकास से होता है।

(Objectives dealing with recall or recognition of knowledge and the development of intellectual abilities and skills come under this domain)

ज्ञानात्मक पक्ष के उद्देश्यों को निम्न वर्गों में रखा गया है और हर वर्ग के उप-वर्ग भी दर्शाए गए हैं, जो इस प्रकार हैं :-

A) ज्ञान (Knowledge)-

- I) परिभाषा (Definition)
- ii) प्रत्यास्मरण (Recall)
- iii) पहचान (Recognition)
- iv) सारणीकरण (Categorization)
- v) विभेदीकरण (Differentiation)
- vi) मापन (Measurement)

B) बोध (Comprehension) -

- I) व्याख्या (Explanation)
- ii) संकेत (Directions , limits)
- iii) चयन (Selection)
- iv) निर्णय (Decision)
- v) वर्गीकरण (Classification)
- vi) सूत्र देना (Give hints or Clues)

C) प्रयोगात्मक (Application) -

I) घोषणा (Declaration)
ii) जाँचना (Evaluation)
iii) अनुमापन (Estimation)
iv) गणना (Counting)
v) प्रदर्शन (Demonstration)
vi) प्रयोग (Experimentation / Application)

D) विश्लेषण (Analysis) -

I) विभाजन (To divide)
ii) तुलना (To Compare)
iii) विभेदीकरण (To Differentiate)
iv) आलोचना (To criticize)
v) सारणीकरण (To Summarize)
vi) विरोध जताना (To oppose)

E) संश्लेषण (Synthesis) -

I) तर्क करना (To reason)
ii) वाद - विवाद (To debate)
iii) सामान्यीकरण (to generalise)
iv) सम्बन्ध निर्माण (To Connect)
v) भविष्य वक्कृत्व (To Predict)
vi) सार प्रस्तुतीकरण (To Summarize)

F) मूल्यांकन (Evaluation) -

I) निर्णय लेना (To decide)
ii) निर्धारण (To establish)
iii) मूल्यांकन (To evaluate)
iv) प्रतिवादन (To oppose)
v) मानसिक अनुक्रमण (Mental attack)
vi) खोजना (To detect)

## 2. भावात्मक पक्ष *(Affective Domain)*

भावात्मक पक्ष के सहारे छात्राध्यापकों की वांछित रूचियों, अभिरूचियों एवं परिबोध का निश्चित-दिशाओं में विकास किया जाता है, इसमें मुख्यत: छ: वर्ग हैं-

भावात्मक पक्ष -

I) ग्राहयता (Receiving)
स्वच्छा से सुनना, पढ़ना, ग्रहण करना

ii) अनुक्रिया (Responding)
निर्देशित अपेक्षाओं का अनुसरण (Stimuli)
उद्दीपन के प्रति क्रिया, रूचि की प्रतिक्रिया

iii) अनुमूल्यन (Valuing)
ऐसी स्थितियों में जब उन पर कोई दबाव न हो तो किसी भी धारणा अथवा अभिरूचि पर आधारित व्यवहार दर्शाए।

iv) प्रत्ययीकरण (Conceptualisation)
ग्रहण किये गए व्यवहार इस प्रकार अपनाना कि जब आवश्यक हो उसी तरह की परिस्थितियों में वही व्यवहार किया जाए।

v) व्यवस्थीकरण (Organising)
व्यवहार द्वारा प्रदर्शित करना कि निर्धारित मूल्यों के प्रति समर्पित है।

vi) मान्यीकरण (Characterising)
सम्पूर्ण व्यवहार में मूल्यों का अभ्यान्तरण करना।

## 3. क्रियात्मक या मनोगतिक पक्ष
*(Connative or Psychomotor Domain)*

I) अनुकरण (Imitation)
कौशल के देखकर, दोहराने का प्रयत्न करना।

ii) व्यवहार कौशल (Manipulation)
निर्देशन के अनुरूप व्यवहार कौशल करना बजाय देखकर अनुकरण करने के।

iii) सूक्ष्मता - सुस्पष्टता (Precision)
मूल सूत्र से स्वतंत्र कौशल की पुनर्रचना परिशुद्ध सही माप और निश्चित स्वरूप पर आधारित।

iv) संधियोजन (Articulation)
एक से अधिक कौशल को संधि कर क्रम से सुव्यवस्थित व संगति से प्रस्तुत करना।

v) सहजीकरण (Naturalisation)
एक या अधिक कौशल को सहजता से बिना किसी शारीरिक व मानसिक दबाव के पूर्ण कर सकता है।

vi) स्वभावीकरण (Conditioning, habit formation)
सभी व्यवहारगत कौशल सहजता से उच्चस्तरीय मानदण्ड तक करने का स्वभावीकरण।

# शैक्षिक उद्देश्य

(सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्य)

उद्देश्य दो प्रकार के होते हैं → विषय अथवा इकाई के विशाल दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर निर्मित उद्देश्य **सामान्य** उद्देश्य कहलाते हैं एवं पाठ के विशिष्ट प्रयोजनों को ध्यान में रखते हुए बनाये गए उद्देश्य, **विशिष्ट** उद्देश्य कहलाते हैं।

राष्ट्रीय शिक्ष नीति, 2020 के अनुसार, पंचपदी शिक्षण पद्धिति पर आधारित पाठ योजना बनानी है। इसमें मुख्यतः पाँच पदों में लिपिबद्ध करनी है।

I) अधीति (अध्यापन-कार्य) -
शिक्षक - छात्र के मध्य - सीखने के शारीरिक - मानसिक तैयारी।

ii) बोध (कक्षाकार्य) -
प्रस्तुत किए गए विषय की अवधारणात्मक स्पष्टता।

iii) अभ्यास (गृहकार्य) -
सीखे हुए विषय की पुष्टि।

iv) प्रयोग -
सीखे हुए विषय को पुस्तकीय ज्ञान आगे जीवन में व्यावहारिक प्रयोगकरने की क्षमता का विकास।

v) प्रसार -
स्वयं प्राप्त ज्ञान का विस्तार, हस्तान्तरण समाज के हित में उपयोग करने की सिद्धता।

**डॉ. राजेश कुमार वर्मा**
प्राचार्य

# राष्ट्र गीत

## वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयज - शीतलाम्,
शस्य श्यामलां मातरम्। वन्दे मातरम्।। 1।।

शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्,
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्,
सुहासिनीं, सुमधुर-भाषिणीम्,
सुखदां, वरदां, मातरम्। वन्दे मातरम्।।2।।

कोटि-कोटि कंठ कल-कल निनाद-कराले,
कोटि-कोटि भुजैधृत-खर-करवाले,
अबला केनो माँ एतो बले,
बहुबल-धारिणी, नमामि तारिणीम्,
रिपुदल-वारणी मातरम्। वन्दे मातरम्।।3।।

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वं ही प्राणाः शरीरे, बाहु ते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि ता भक्ति,
तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे। वन्दे मातरम्।। 4।।

त्वं ही दुर्गा दशप्रहरण-धारिणी,
कमला कमल-दल-विहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलाम्,
सुजलां सुफलां, मातरम्। वन्दे मातरम्।।5।।

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम,
धरणणी भरिणी मातरम्। वन्दे मातरम्।।6।।

भारत माता की जय।

# पूरनमल बाजोरिया शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

**NCTE-ERC भुवनेश्वर से मान्यता प्राप्त**

**विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली**
**&**
**विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान, नोएडा का एक प्रकल्प**

**भारती शिक्षा समिति बिहार पटना द्वारा संचालित**

**तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय एवं बिहार विद्यालय परीक्षा समिति पटना से सम्बद्ध**

**Mob. : 9775402178 (P) 9905176915 (O)**

**E-mail : pbttcollege@gmail.com / Website : www.pbttcollege.com**